खण्ड – 4 : सिद्धान्त और वाद

इकाई – 1 : स्वच्छंदतावाद

इकाई की रूपरेखा

4.1.00. उद्देश्य
4.1.01. प्रस्तावना
4.1.02. स्वछन्दता का अर्थ और स्वछन्दतावाद की परिभाषा
    4.1.02.1. स्वछन्दता शब्द का अर्थ
    4.1.02.2. स्वछन्दतावाद की परिभाषा
4.1.03. स्वछन्दतावाद की पूर्व-पीठिका
    4.1.03.1. स्वछन्दतावादी जीवन-दृष्टि
    4.1.03.2. स्वछन्दतावादी कला-सिद्धान्त
4.1.04. स्वछन्दतावाद का उद्भव और विकास
4.1.05. स्वछन्दतावाद का इतिहास
    4.1.05.1. स्वछन्दतावाद का इतिहास (पृष्टभूमि)
    4.1.05.2. स्वछन्दतावाद का इतिहास (जर्मनी)
    4.1.05.3. स्वछन्दतावाद का इतिहास (इंग्लैण्ड)
    4.1.05.4. स्वछन्दतावाद का इतिहास (फ्रांस)
4.1.06. स्वछन्दतावाद की मुख्य प्रवृत्तियाँ
    4.1.06.1. आत्मपरकता
    4.1.06.2. प्रकृति-प्रेम
    4.1.06.3. भाव-प्रवणता
    4.1.06.4. कल्पना
    4.1.06.5. विद्रोह
    4.1.06.6. भाषा-शैली और काव्यरूप
    4.1.06.7. सौन्दर्य की चाह
4.1.07. स्वछन्दतावाद की अन्य प्रवृत्तियाँ
    4.1.07.1. जैविकता
    4.1.07.2. विलक्षणता और चित्रात्मकता
    4.1.07.3. विडम्बना
    4.1.07.4. राष्ट्रवाद
4.1.08. स्वछन्दतावाद का अवसान
4.1.09. पाठ का सारांश
4.1.10. उपयोगी पुस्तकें और सन्दर्भ
    4.1.10.1. हिन्दी की पुस्तकें
    4.1.10.2. अंग्रेज़ी पुस्तकें

4.1.10.3. इंटरनेट स्रोत

4.1.11. अभ्यास के लिए प्रश्न

4.1.00. उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप

4.1.00.1. स्वछन्दता का अर्थ और स्वछन्दतावाद का स्वरूप समझ पाएँगे।

4.1.00.2. स्वछन्दतावाद के उद्भव और विकास को जान पाएँगे।

4.1.00.3. स्वछन्दतावाद की विशेषताओं और मुख्य प्रवृत्तियों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

4.1.00.4. प्रमुख स्वछन्दतावादी कवियों और चिन्तकों के विचार जान पाएँगे।

4.1.01. प्रस्तावना

पाश्चात्य काव्यशात्र के अध्ययन के अन्तर्गत अब तक आप अरस्तू से लेकर आई॰ ए॰ रिचर्ड्स तक प्रमुख चिन्तकों और उनके विचारों का अध्ययन कर चुके हैं। प्रस्तुत इकाई में आप स्वछन्दतावाद के बारे में अध्ययन करेंगे।

स्वछन्दतावाद का जन्म अठ्ठारहवीं सदी के यूरोप में हुआ। इस आन्दोलन का प्रभाव पूरी दुनिया के चिन्तन और साहित्य पर किसी न किसी रूप में रहा है। इस आन्दोलन का मुख्य ज़ोर आत्माभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता पर था। कवि स्वयं कविता का नायक और वाचक बना। पिछले समय की तार्किकता को यांत्रिक, निर्वैयक्तिक और कृत्रिम घोषित कर दिया गया। इसके स्थान पर भावात्मकता, सहजता और मौलिकता को वैचारिक और सृजनात्मक साहित्य का मुख्य आधार माना गया। स्वछन्दतावादी कवि स्वयं को अपने कल्पनात्मक सत्य को अभिव्यक्त करने वाली स्वतन्त्र सत्ता मानने लगे। उन्होंने लोक भाषाओं और लोक-संस्कृति का महत्त्व स्वीकार करते हुए उन्हें रचनाशीलता का माध्यम और विषय बनाया। इससे प्रकृति के प्रति उत्कट प्रेम की अभिव्यक्ति के साथ-साथ साहित्य में साधारण जीवन की पुनर्प्रतिष्ठा हुई।

अनेक पूर्व-प्रचलित मूल्यों और विचारों के प्रति निषेधात्मक प्रतिक्रिया स्वरूप उभरने के बावजूद स्वछन्दतावाद कोई नकारात्मक प्रवृत्ति नहीं थी। चिन्तन और सृजन के क्षेत्र में इस आन्दोलन ने अनेक मूल्यवान कृतियाँ साहित्य जगत् को दी है। वस्तुत: स्वछन्दतावाद एक व्यापक कलात्मक और सांस्कृतिक रुझान था जो अठ्ठारहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में प्रारम्भ हुआ और उन्नीसवीं सदी के आरम्भिक दशकों में अपने चरम पर पहुँचा।

4.1.02. स्वछन्दता का अर्थ और स्वछन्दतावाद की परिभाषा

हिन्दी में 'स्वछन्दतावाद' अंग्रेज़ी के 'रोमैण्टिसिज़्म' का समानार्थी शब्द और विचार है। 'स्वछन्दतावाद' को प्राय: 'स्वछन्दतावादी आन्दोलन' या 'स्वछन्दतावादी उत्थान' के नाम से भी जाना जाता है। 'स्वछन्दता' या

'स्वछन्दतावाद' से जो सामान्य अर्थ-बोध होता है, एक साहित्यिक-सांस्कृतिक प्रवृत्ति या आन्दोलन के रूप में इसका अर्थ इससे कहीं अधिक व्यापक और संश्लिष्ट है।

4.1.02.1. स्वछन्दता शब्द का अर्थ

'रोमैण्टिसिज़्म' शब्द 'रोमैंस' और 'रोमैण्टिक' शब्दों से निस्सृत है। ये दोनों शब्द अतिभावुकता और काल्पनिकता के अन्तर्निहित भावों के साथ अलग-अलग समय में अलग-अलग अर्थों में प्रयुक्त होते रहे हैं। इन शब्दों की अर्थध्वनियाँ मध्यकालीन रूमानियत और साहसिक कथाओं से लेकर उन्मुक्त और अमूर्त विचारों की अभिव्यक्ति तक व्याप्त हैं, परन्तु हम यहाँ पर इन शब्दों के साहित्यिक इतिहास पर ही अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे।

'रोमैण्टिक कविता' शब्द का प्रथम प्रयोग पुनर्जागरण काल के इतालवी कवियों – लुडोविको अरिस्तो और तोरक्वातो तास्सो – ने सोलहवीं सदी में किया था। उन्होंने वीरतापूर्ण कथाओं और मध्यकालीन रोमांस (प्रेम, वीरता, उच्च आदर्शों और अतिमानवीय क्रियाओं पर आधारित कथाएँ) के आशय में इस शब्द का प्रयोग किया था। फ्रांस में 1669 में कला-चिन्तन के सन्दर्भ में और इंग्लैण्ड में 1674 में पारिभाषिक रूप में इसका प्रयोग हुआ। टॉमस वार्टन ने 1774 में प्रकाशित ग्रन्थ 'अंग्रेज़ी काव्य का इतिहास' में संकलित अपने शोध निबन्ध का शीर्षक 'यूरोप में रोमैण्टिक कथा साहित्य का उद्भव' रखा था। जर्मनी में 1766 में गर्स्टनबर्ग ने वार्टन की पुस्तक 'फेयरी क्वीन पर टिप्पणियाँ' पर लिखी एक समीक्षा में 'गॉथिक' और 'रोमैण्टिक' में अन्तर बताने का प्रयास किया।

जर्मन कवि और दार्शनिक नोवालिस ने 1798-99 में 'रोमैण्टिक' शब्द का संज्ञा के रूप में स्पष्ट प्रयोग किया। नोवालिस के विचारों की प्रतिध्वनि फ्रेड्रिख़ श्लेगल के विचारों में मिलती है जब वह कहता है कि स्वछन्दता समस्त काव्य का तत्त्व है और समस्त काव्य स्वछन्द होता है। फ्रेड्रिख़ श्लेगल के भाई ऑगस्त श्लेगल ने सौन्दर्यशास्त्र पर दिए गए अपने भाषणों (येना,1798) में रोमैण्टिक नाटकों के प्रभाव की ओर संकेत किया था। आगे चलकर उसने (बर्लिन,1801-04 और वियना,1808-09 में) 'शास्त्रीय' के विरोधी अर्थों में विशेष साहित्यिक प्रवृत्ति के रूप में 'रोमैण्टिक' शब्द का प्रयोग कर इसे साहित्यिक इतिहास में प्रतिष्ठित किया। यहाँ से यह शब्द इस विशेष अर्थ के साथ दुनिया के अन्य देशों में पहुँचा। हिन्दी साहित्य में 'रोमैण्टिक' को 'स्वछन्दता' और 'रोमैण्टिसिज़्म' को 'स्वछन्दतावाद' के अर्थ में पारिभाषिक मान्यता प्राप्त है । 'स्वछन्दता' और 'स्वछन्दतावाद' शब्दों का साहित्यिक सन्दर्भ में प्रयोग उस नवीन रचनाशीलता के लिए किया जाता है जिसका उत्थान अठ्ठारहवीं सदी के उत्तरार्द्ध और उन्नीसवीं सदी के आरम्भिक दशकों में मुख्य रूप से नव-आभिजात्यवाद के विरोध में हुआ था।

4.1.02.2. स्वछन्दतावाद की परिभाषा

साहित्यिक आलोचकों के मध्य स्वछन्दतावाद की परिभाषा को लेकर बहुत विवाद और मतभेद रहा है। 'दि ऑक्स्फ़र्ड कम्पैनियन टू इंगलिश लिट्रेचर' में स्वछन्दतावाद के सम्बन्ध में लिखा गया है कि यह "एक

साहित्यिक आन्दोलन, और संवेदनशीलता में बड़ा परिवर्तन था, जो ब्रिटेन और पूरे यूरोप में 1770 और 1848 के बीच हुआ। बौद्धिक स्तर पर इसने ज्ञानोदय के विरुद्ध तीक्ष्ण प्रतिक्रिया व्यक्त की। राजनीतिक दृष्टि से यह फ्रांस और अमेरिकी क्रान्तियों से प्रेरित था ... भावनात्मक रूप से इसने आत्म और व्यक्तिगत अनुभवों के महत्त्व को असीम और लोकोत्तर भाव के साथ दृढ़तापूर्वक अभिव्यक्त किया ... सामाजिक रूप से इसने प्रगतिशील उद्देश्यों का प्रबल समर्थन किया ... स्वछन्दतावाद का शैलीवैज्ञानिक सिद्धान्त गहनता है, और इसका नारा "कल्पना' है।"

स्वछन्दतावाद वैयक्तिकता और मानव-अनुभव के आत्मनिष्ठ आयामों पर बल देता है। वैयक्तिकता पर अधिक बल का आशय प्रत्येक व्यक्ति की स्वायत्तता और इस स्वायत्तता से उत्पन्न विविधता और भेद है। इसलिए कुछ आलोचक मानते हैं कि सैद्धान्तिक और रचनात्मक स्तर पर एक नहीं अनेक स्वछन्दतावाद हैं। ऑर्थर ओ॰ लवजॉय ने अपने निबन्ध 'ऑन द डिस्क्रिमिनेशन ऑफ रोमैण्टिसिज़्म'(1924) में स्वछन्दतावाद की बहुलता को रेखांकित किया है और लिखा है कि "एक देश का स्वछन्दतावाद दूसरे देश के स्वछन्दतावाद से मेल नहीं खाता है। यह असल में स्वछन्दतावादों का बहुवाद है।" लवजॉय के अनुसार स्वछन्दतावाद के सम्बन्ध में विभिन्न कलाकारों के परस्पर विरोधी विचार सामने आते हैं और इसके इतने अर्थ हैं कि इसका कोई अर्थ ही नहीं रह गया है। अत: हमें स्वछन्दतावादों की बात करनी चाहिए ताकि स्वछन्दतावाद और स्वछन्दतावादी विचारों के अलग-अलग रूपों को पहचाना जा सके।

दूसरी ओर, रेने वेलेक ने इस मत से अपनी असहमति प्रकट करते हुए 'कॉन्सैप्ट्स ऑफ़ क्रिटिसिज़्म' में लिखा है कि "इस अतिशय बहुवाद का कोई आधार नहीं है, क्योंकि मुख्य स्वछन्दतावाद के आन्दोलनों की दार्शनिक मान्यताओं और शैलियों में अन्विति है और ये विचारों के समन्वित समूह का निर्माण करते हैं।" रेने वेलेक के अनुसार स्वछन्दतावाद यूरोप के चिन्तन और कला का एक सामान्य आन्दोलन है तथा इसकी निजी जड़ें हर बड़े देश में है, क्योंकि इस प्रकार की समस्त गम्भीर और सार्थक सांस्कृतिक क्रान्तियाँ आयातों से सम्पन्न नहीं होतीं।

वॉल्टर पेटर की मान्यता है कि "स्वछन्दतावाद किसी सांस्कृतिक दौर का कोई अलग कला-आन्दोलन नहीं है, बल्कि यह तो प्रत्येक काल में सभी कला-आन्दोलनों का एक भाग रहा है। ... स्वछन्दतावाद प्रत्येक युग की नवीन, परम्परा-भंजक और नवोन्मेषी रचनाशीलता में सदैव पाया जाता है और वही आगे चलकर क्लासिक या शास्त्रीय बन जाता है।"

चार्ल्स बॉदलेयर के शब्दों में "स्वछन्दतावाद की अवस्थिति न तो विषय-वस्तु के चुनाव में है और न ही वास्तविक सत्य में, बल्कि अनुभव करने के ढंग में है।"

4.1.03. स्वछन्दतावाद की पूर्व-पीठिका

एक कला-सिद्धान्त या साहित्यिक आन्दोलन के रूप में स्वछन्दतावाद का सम्बन्ध अट्ठारहवीं और उन्नीसवीं सदी के यूरोप से है, परन्तु स्वछन्दतावाद कोई एकदम नया विचार नहीं था। वस्तुत: शास्त्रीय अथवा

आभिजात्य भावधारा के साथ-साथ स्वछन्द भावधारा सदैव चलती रही है, जिसमें बाह्य यथार्थ को प्रमुखता दी जाती थी और कला को इस यथार्थ का प्रतिबिम्ब माना जाता था।

4.1.03.1. स्वछन्दतावादी जीवन-दृष्टि

अनुकरण सिद्धान्त के अनुसार मानव मस्तिष्क बाह्य जगत् का निष्क्रिय भोक्ता है। वह इसमें किसी भी प्रकार से संशोधन नहीं कर सकता। प्लेटो और अरस्तू अलग-अलग तर्क-प्रणाली के साथ इसी सिद्धान्त के प्रवर्तक थे। अनुकरण सिद्धान्त में मनुष्य का महत्त्व मानव-प्रजाति के सदस्य के रूप में है, न कि एक व्यक्ति के रूप में। "सामान्य" में ही सभी मूल्य समाहित हैं, जो भी व्यक्तिगत है वह विशिष्ट है। तर्क ही सर्वश्रेष्ठ गुण है, वही सर्वोपरि पथ-प्रदर्शक और त्राणदाता होता है। नव-आभिजात्यवाद में अनुकरण के सर्वमान्य सिद्धान्त के अतिरिक्त होरेस के इस सूत्र पर विशेष बल दिया गया कि कला का उद्देश्य 'आनन्द' और 'उपदेश' होना चाहिए।

अठ्ठारहवीं सदी के अन्त तक आते-आते अनुकरणात्मक-तर्कवादी सौन्दर्यशास्त्र की मूलभूत मान्यताओं को चुनौती देने वाले नए रुझानों और कला-मानों के स्पष्ट संकेत मिलने लगते हैं, जीवन और कला के प्रति नया स्वछन्द दृष्टिकोण उभरने लग गया था।

काण्ट और फ़िख़्टे वस्तुगत जगत् के आत्मगत सन्दर्भों को अपने चिन्तन में प्रमुखता देने लग गए। फ़िख़्टे ने घोषणा कर दी कि अनात्म का अस्तित्व आत्म पर निर्भर होता है तथा संसार का अस्तित्व और रूपाकार पूर्ण रूप से व्यक्तिगत कल्पना पर निर्भर होता है। फ्रेड्रिख़ श्लेगल और ऑगस्त श्लेगल, हायरिख़ हायने तथा लुडविग ओहलान्द आदि ने अपने लेखन में इस वैचारिक परिवर्तन को साकार कर दिया।

संक्षेप में, स्वछन्दतावादियों ने मनुष्य की आत्मपरकता और उसकी अभिव्यक्ति तथा प्रकृति के उल्लास को अपना आदर्श माना है। इन आदर्शों के साथ समाज के आदिम रूप, मनुष्य की रागात्मकता और भावावेग, स्वत:स्फूर्ति और सरलता, उदात्त और लोकोत्तर भाव तथा कल्पना को समाहित करते हुए इन्हें तार्किकता और वस्तुगत यथार्थ से श्रेष्ठ और मूल्यवान माना है।

4.1.03.2. स्वछन्दतावादी कला-सिद्धान्त

उपर्युक्त ज्ञान-मीमांसा से निस्सृत कला-सिद्धान्त कलाकार के आन्तरिक आयामों को विशेष महत्त्व प्रदान करता है। यह अनुकरण सिद्धान्त के इस निष्कर्ष को अस्वीकार करता है कि कला अनुकृति या अधिक से अधिक एक व्याख्या है, या कि कला बुद्धि की विषय-वस्तु है जो अलग-अलग विचारों को मिलाकर सुखद दृश्यों या सर्वमान्य चित्रों का निर्माण करती है। स्वछन्दतावादी चिन्तन के अनुसार कला अनुकरण या व्याख्या नहीं है, और न ही यह किसी प्रकार का सार्वभौमिक प्रतिमान है। वस्तुत: कविता व्यक्ति के अन्तर्मन की अभिव्यक्ति है और यदि यह बाह्य जगत् का कुछ भी प्रतिबिम्बित करती है तो केवल 'कल्पना' द्वारा परिवर्तित बाह्य जगत् को ही प्रतिबिम्बित करती है।

यद्यपि स्वछन्दतावादियों ने काव्य की परिभाषा में अलग-अलग प्रकार के विवरण और तर्क दिए हैं, लेकिन उन सब में अभिव्यक्ति और आन्तरिक के बाह्यान्तरण पर बल एक केन्द्रीय तत्त्व है। वर्ड्सवर्थ ने कविता को 'शक्तिशाली भावनाओं के सहज उत्प्रवाह' के रूप में परिभाषित किया है। कॉलरिज रेखांकित करता है कि 'सभी कलाएँ व्यक्ति के अन्तर्जगत की अभिव्यक्ति है।' शैली ने कविता को 'कल्पना की अभिव्यक्ति' कहा है और बायरन कविता को कल्पना का ऐसा लावा करार देता है जिसका प्रस्फुटन भूकम्प को रोक देता है।

यद्यपि आत्माभिव्यक्ति और कल्पना स्वछन्दतावाद की मुख्य प्रवृत्तियाँ हैं, परन्तु जैसा कि वर्ड्सवर्थ ने कहा है कि कविता का प्रयोजन आत्माभिव्यक्ति और आनन्द से पहले मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन को समृद्ध और पूर्ण बनाना तथा दु:खियों और कमज़ोरों को सांत्वना प्रदान करना है। इसलिए स्वछन्दतावादी कवियों ने तथाकथित भद्रता को कृत्रिम और आडम्बरपूर्ण बताकर उसका परित्याग कर दिया। कलाकार को सर्वश्रेष्ठ मानते हुए भावना, कल्पना और अन्त:प्रज्ञा को नए काव्य-मूल्य घोषित कर दिया।

4.1.04. स्वछन्दतावाद का उद्भव और विकास

स्वछन्दतावादी साहित्य और आलोचनात्मक परम्परा का उद्भव उन सामाजिक, राजनीतिक,आर्थिक और बौद्धिक परिवर्तनों के गर्भ से हुआ जो पुनर्जागरण काल से यूरोप में विकसित हो रहे थे। यूरोप के इतिहास में यह विस्तृत काल-खण्ड प्राचीन सामन्ती व्यवस्था और धार्मिक अन्धविश्वासों से मुक्त होने का समय था। इस युग में बुद्धि और विवेक मानवता के कल्याण का मूल मंत्र बन चुके थे। जीवन में बुद्धि और तर्क की अतिशय प्रमुखता के कारण साहित्य में भी भावों का स्थान गौण हो गया था। नियमबद्धता और शास्त्रीयता ने उन्मुक्त विचारों और भावनाओं का मार्ग अवरुद्ध कर दिया था। कठोर प्रतिमानों और तर्क-बुद्धिवाद की कसौटियों पर कसे जाने के कारण साहित्य जन-मन से दूर हो गया था।

अठ्ठारहवीं शताब्दी में जर्मनी और इंग्लैण्ड के दर्शनशास्त्र और साहित्यिक सिद्धान्तों में दृढ़ अन्तस्सम्बन्ध रहे हैं। ये सम्बन्ध इन दोनों देशों के बीच के राजनीतिक और आर्थिक सम्बन्धों के परिचायक हैं। इन देशों में प्राचीन सामन्ती व्यवस्था के विरुद्ध बुर्जुवा वर्ग का विरोध मुखर और निर्णायक रूप से हुआ, जबकि फ्रांस में 1789 की 'एस्टेट जनरल' और 'फ्रांस की राज्य-क्रान्ति' की उग्रता के बाद मध्यवर्ग की आकांक्षाओं को नई उड़ान मिली।

जर्मनी के भाववादी दर्शन और 'रोमैण्टिक' साहित्य का स्वछन्दतावादी साहित्य, विशेष रूप से अंग्रेज़ी रचनाकारों पर गहरा प्रभाव पड़ा। इमैनुएल काण्ट ने परम्परागत नैतिकता और धार्मिक विचारों की नए दार्शनिक आधारों के साथ पुनर्रचना की, जिसमें धार्मिक विचारों और जीवन-दृष्टि के लौकिकीकरण पर विशेष आग्रह था। फ्रेड्रिक हेगल के दर्शन का प्रस्थान-बिन्दु है – आत्म तथा चिन्तन का तादात्म्य अर्थात् किसी विचार या आत्मा की अभिव्यक्ति के रूप में वास्तविक जगत् का अवबोध। फ्रेड्रिक शिलर का विचार था कि केवल कला ही मनुष्य को वास्तविक स्वतन्त्रता प्रदान कर सकती है। विशुद्ध नैतिक मानदण्डों पर आधारित होने के बावजूद उसका यह

विचार सामन्ती व्यवस्था के प्रति विरोध का एक रूप था। ये सभी विचार स्वछन्दतावादी सौन्दर्य-दृष्टि के निर्माण में सहायक रहे हैं।

फ्रांसीसी क्रान्ति ने 'स्वतन्त्रता, समानता और भ्रातृत्त्व' का उद्घोष किया, जो अनेक रचनाकारों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना। कई लेखकों ने फ्रांस जाकर इसमें भाग भी लिया था। बौद्धिक स्तर पर यह क्रान्ति मुख्य रूप से रूसो के लेखन से प्रेरित थी। रूसो ने सामन्ती वर्गसम्बन्धों और निरंकुशतावाद की तीव्र आलोचना की और मनुष्य की समानता का समर्थन किया।

4.1.05. स्वछन्दतावाद का इतिहास

किसी भी कला-आन्दोलन के सम्यक ज्ञान के लिए उसके आन्तरिक सूत्रों की पहचान अत्यन्त आवश्यक होती है। काल के प्रवाह में बनते-बिगड़ते ही कोई विचार या आन्दोलन अपना स्वरूप ग्रहण करता है। स्वछन्दतावादी आन्दोलन को सही परिप्रेक्ष्य में समझने के लिए उसके इतिहास पर दृष्टिपात करना समीचीन होगा।

4.1.05.1. स्वछन्दतावाद का इतिहास (पृष्ठभूमि)

अठ्ठारहवीं सदी में औद्योगिक क्रान्ति, राष्ट्रवाद के विकास और वैज्ञानिक आविष्कारों की उपलब्धियों ने उच्च वर्ग को अपना वर्चस्व स्थापित करने की ओर प्रेरित किया, जिससे समाजवाद, अराजकतावाद तथा परम्परा और धर्म के पुनरुत्थान जैसे अन्तर्विरोधी आन्दोलनों का जन्म हुआ। इस परिदृश्य में असहमति और विरोध के स्वर उभरने लगे और आभिजात्य वर्ग के विरुद्ध वैचारिक और राजनीतिक विद्रोह शुरू हो गया।

औद्योगिक क्रान्ति ने भी धीरे-धीरे आभिजात्यवादी संस्कृति के सामाजिक आधारों को कमज़ोर किया। फ्रांसीसी क्रान्ति ने इससे राजनीतिक ढंग से निपटने का मार्ग दिखाया। जनता के व्यापक हिस्सों– विशेष रूप से मध्य वर्ग – के हितों को प्रतिबिम्बित करने वाली नयी संस्कृति एक आवश्यकता बन गई थी। 'स्वछन्दतावादी आन्दोलन' ने इस ऐतिहासिक आवश्यकता की पूर्ति की। स्वछन्दतावादी अपने आदर्श अतीत में खोज रहे थे, इसलिए जब तक पुरानी सामन्ती व्यवस्था और उभरती हुई पूंजीवादी व्यवस्था के मूल्यों का टकराव समाप्त नहीं हुआ, तब तक किसी भी देश के साहित्य और आलोचना में स्वछन्दतावादी प्रवृत्तियाँ पूरी तरह से प्रकट नहीं हो पाई थीं। यह अकारण नहीं है कि स्वछन्दतावाद का विकास प्रारम्भ में जर्मनी, इंग्लैण्ड और फ्रांस में हुआ जहाँ समाज में बुर्जुआ वर्ग का आधिपत्य पहले हुआ। इतिहास की गति के साथ आगे चलकर इटली, अमेरिका, स्पेन, पोलैंड और रूस आदि देशों में स्वछन्दतावाद का प्रसार हुआ, विशेष रूप से इनके व्यापारिक केन्द्रों में, जहाँ बुद्धिजीवियों और लेखकों ने परम्परागत मूल्यों को खुली चुनौती दी।

इस आन्दोलन के अग्रणी देशों – जर्मनी, इंग्लैण्ड और फ्रांस में अपनी मूल अवधारणा और प्रेरणा में समानता दर्शाने के बावजूद इसके उद्भव और विकास के विशेष स्थानीय कारण और परिस्थितियाँ रही हैं। आइये देखें कि यूरोप के इन तीन देशों में स्वछन्दतावाद का विकास किस प्रकार हुआ।

4.1.05.2. स्वछन्दतावाद का इतिहास (जर्मनी)

जर्मनी को स्वछन्दतावाद की जन्मभूमि कहा जाता है। इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रान्ति, आभिजात्यवाद और फ्रांस की राज्य-क्रान्ति की पृष्ठभूमि में इसका जन्म हुआ। हेमन, गेटे, शिलर और हर्डर आदि के नेतृत्त्व में शुरू हुए 'तूफान और तनाव' (स्टॉर्म एण्ड स्ट्रैस) आन्दोलन की विरासत और फ्रांसीसी दार्शनिक रूसो के प्रभाव के साथ-साथ इसके दर्शनशास्त्र और साहित्य-सिद्धान्त की मुख्य अवधारणाओं का स्रोत जर्मनी के दार्शनिक और लेखक थे। गेटे, शिलर, नोवालिस, हायने जैसे कवि और फ्रेड्रिक श्लेगल और ऑगस्त श्लेगल जैसे आलोचक तथा हेगल, काण्ट, शेलिंग, फ़िख़्टे एवं शोंपनहोंवर जैसे दार्शनिक-विचारक इस सांस्कृतिक आन्दोलन के वास्तविक प्रणेता थे।

फ्रेड्रिक श्लेगल ने अपने ग्रन्थ 'अथीनीएम फ्रैग्मैण्ट' में माना है कि 'स्वछन्द' शब्द की सुस्पष्ट समझ का विकास आवश्यक है ताकि इस आन्दोलन को जर्मनी और आधुनिकता का प्रतीक बनाया जा सके। स्वयं उसने 'स्वछन्द विडम्बना' की अवधारणा के माध्यम से जीवन और जगत् को समझने का प्रयास किया। ऑगस्त श्लेगल के अनुसार कविता में केवल आन्तरिक उत्कृष्टता ही निर्णायक होती है। हमें इस आन्तरिकता को किसी आवरण से छिपाना नहीं चाहिए।

ऑगस्त श्लेगल से कुछ ही समय पहले फ्रेड्रिक शिलर ने इस स्वछन्द अवधारणा को अपने निबन्ध 'नाइईव एण्ड सेंटीमेंटल पॉयट्री' (1795) में बाल सुलभ और आदिम प्रवृत्तियों का मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विश्लेषण करते हुए स्पष्ट कर दिया था। उसने बताया कि सभ्य व्यक्ति जिन प्रेमपूर्ण सुकोमल भावों का अनुभव प्रकृति और आदिम अवस्था के लिए करता है वह अनुभव नैतिक है न कि सौन्दर्यात्मक।

नयेपन के उत्साह के बावजूद जर्मन स्वछन्दतावादी अपने समय के बदलते यथार्थ को पूरी तरह से समझ पाने में नाकाम रहे। कुछ ही समय बाद कई लेखक अतीत में लौटने लगे और जिस काल को 'अन्ध युग' कहा जाता था वह उन्हें 'मानवता का अद्भुत काल' नज़र आने लग गया। उन्हें मध्ययुगीन नैतिकता लुभाने लगी। उस समय जर्मन स्वछन्दतावादियों पर ज्ञानोदयी तर्कवादियों द्वारा वैचारिक आक्रमण हो रहे थे और धार्मिक संस्थाएं परम्परागत मूल्यों की संरक्षक बनी हुई थीं। ऐसे परिवेश में पुरानी पीढ़ी के अधिकांश जर्मन लेखक स्वछन्दता की मूल भावना को अक्षुण्ण नहीं रख सके। फ्रेड्रिक श्लेगल और नोवालिस प्रोटेस्टैण्ट से कैथोलिक प्रचारक बन गए; जबकि फ्रेड्रिक श्लायरमारकर आधुनिक प्रोटेस्टैण्ट उदारवाद का बड़ा धर्माचार्य बन गया। अपने पुरोधा शिलर के साथ उपर्युक्त सभी लेखक यूरोपीय स्वछन्दतावाद के अग्रणी सिद्धान्तकार और आलोचक थे।

4.1.05.3. स्वछन्दतावाद का इतिहास (इंग्लैण्ड)

इंग्लैण्ड में स्वछन्दतावादी आन्दोलन एक स्वत: विकसित और अनौपचारिक साहित्यिक गतिविधि की तरह था। इसका प्रारम्भ विलियम वर्ड्सवर्थ के काव्य-संग्रह 'लिरिकल बैलेड्स' के प्रकाशन (1798) से माना जाता है। सन 1800 में प्रकाशित 'लिरिकल बैलैड्स' के दूसरे संस्करण (1802 में संशोधित एवं परिवर्द्धित) में वर्ड्सवर्थ ने एक लम्बी 'भूमिका' लिखी। यह 'भूमिका' 'लिरिकल बैलेड्स' में संगृहीत कविताओं के बारे में है। जिसमें काव्य के उद्देश्य, स्वरूप, विषयवस्तु और काव्य-भाषा पर वर्ड्सवर्थ ने अपनी मान्यताओं को अभिव्यक्त किया है। 'लिरिकल बैलेड्स' में वर्ड्सवर्थ के साथ-साथ कॉलरिज की कविताएँ भी हैं और भूमिका में व्यक्त विचारों में कॉलरिज के विचार भी शामिल थे। यद्यपि आगे चलकर कॉलरिज ने वर्ड्सवर्थ के विचारों से अपना मतभेद प्रकट किया और उसकी आलोचना की। 'लिरिकल बैलेड्स' के लिए वर्ड्सवर्थ द्वारा लिखी गई 'भूमिका' स्वतंत्र अभिव्यक्ति के नए सौन्दर्यशास्त्र का घोषणा-पत्र है। कॉलरिज ने अपने सौन्दर्यशास्त्र की नींव कल्पना के सिद्धान्त और जैववाद के विचार के आधार पर रखी।

सैमुअल टेलर कॉलरिज अंग्रेज़ी कविता की स्वछन्दतावादी धारा का प्रमुख और प्रतिभाशाली कवि था। वह साहित्य का आलोचक भी था। वह जर्मन दार्शनिकों से बहुत प्रभावित था। उसने अपनी आलोचना पुस्तक 'बायोग्राफ़िया लिटरेरिया' में संवेदनात्मक ज्ञान और काव्य रचना के सम्बन्धों की व्याख्या प्रस्तुत की है। उसने कविता में कल्पना की अनिवार्यता बताते हुए उसके भेदों और कार्यों का भी विस्तार से उल्लेख किया है। उसने कल्पना को काव्य-सृजन का आधार स्वीकार करते हुए उस पर मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक दृष्टि से विचार किया है।

अंग्रेज़ कवि शेली की कविताओं में स्वत:स्फूर्त गेयता एक महत्त्वपूर्ण गुण है। उनकी कविताओं में प्रेम, प्रकृति और सामाजिक परिवर्तन की भावनाएँ सहज ढंग से अभिव्यक्त हुई हैं। शेली भी फ्रांसीसी क्रान्ति से प्रभावित था। उसने काव्य सम्बन्धी अपने विचार अपनी पुस्तक 'ए डिफेंस ऑफ पोयट्री' में अभिव्यक्त किए हैं। वह कविता को कल्पना की अभिव्यक्ति मानता है। उसने नैतिकता को ही प्रेम मानते हुए प्रेम को एक नया अर्थ प्रदान किया।

प्राय: वर्ड्सवर्थ, कॉलरिज, कीट्स, शेली, बायरन आदि कवियों के लेखन की विशेषताओं या प्रवृत्तियाँ के आधार पर अंग्रेज़ी स्वछन्दतावाद को पहचाना जाता है। ध्यान देने की बात है कि उस दौर के गद्य लेखकों जैसे चार्ल्स लैम्ब, सर वॉल्टर स्काट, विलियम हैज़लिट आदि के लेखन में भी स्वछन्दतावादी रुझान स्पष्ट रूप में परिलक्षित होते हैं।

4.1.05.4. स्वछन्दतावाद का इतिहास (फ्रांस)

फ्रांस में ज्याँ ज़ाक रूसो स्वछन्दतावाद का मुख्य प्रवर्तक था। रूसो की महान् उद्घोषणा कि 'मनुष्य स्वतंत्र जन्म लेता है, और सब जगह बेड़ियों में जकड़ा हुआ है', पहले फ्रांसीसी क्रान्ति और आगे चलकर

स्वछन्दतावादी साहित्य का प्रेरक बनी। उसने मानव सभ्यता के विकास की उपलब्धियों को भ्रष्टाचार, कृत्रिमता और यांत्रिकता के लिए दोषी ठहराया और मनुष्य को प्रकृति की ओर लौटने का आह्वान किया। रूसो का 'सामाजिक संविदा' का सिद्धान्त लोकतान्त्रिक मूल्यों का पुरज़ोर समर्थन करता है।

फ्रांस में स्वछन्दतावादी प्रवृत्तियों की स्पष्ट झलक मदाम जर्मैन द स्तैल और फ्रांस्वा द शतोब्रीयाँ की रचनाओं में मिलती है। स्तैल ने 'विवेक' और 'कल्पना' को ही मनुष्य के सर्वाधिक विलक्षण गुण माना। इन दोनों में भी 'कल्पना' अधिक महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि केवल 'विवेक' मनुष्य के मन-मस्तिष्क को संतुष्ट नहीं कर सकता। मनुष्य को भुलावों और आनन्द की आवश्यकता होती है, और काल्पनिक रचनाएँ आनन्द प्रदान करने के साथ-साथ हमारे नैतिक आदर्शों को भी प्रभावित करती हैं। स्तैल ने समाज में महिलाओं की स्थिति और उनकी स्वतन्त्रता का मुद्दा भी उठाया। शतोब्रीयाँ ने ज्ञानोदय के आदर्शों का विरोध करते हुए कैथोलिक मत का समर्थन और प्रचार किया, परन्तु उसने अपनी रचनाओं में समाज के निम्न वर्ग के लोंगों के जीवन का चित्रण भी किया। जॉर्ज सैंड ने साधारण ग्रामीणों और किसानों को अपनी रचनाओं के नायक-नायिकाएँ बनाया। विक्टर ह्यूगो ने कला और कविता को शास्त्रीय बन्धनों से मुक्त कराने के लिए संघर्ष किया तथा सामाजिक अन्याय और शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाई।

4.1.06. स्वछन्दतावाद की मुख्य प्रवृत्तियाँ

स्वछन्दतावाद किन्हीं पूर्वनिर्धारित सुस्पष्ट नियमों के अन्तर्गत शुरू किया गया कला-आन्दोलन नहीं था। वस्तुत: नियमों का विरोध ही तो इसकी प्रारम्भिक पहचान थी। इस आन्दोलन के किसी एक लेखक की सभी रचनाओं में या एक देश के सभी रचनाकारों में एक समान प्रवृत्तियाँ नहीं पाई जाती हैं। समय के अन्तराल से एक ही लेखक के विचारों और रचनात्मक प्राथमिकताओं में भी स्पष्ट परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं। आइये, इस विस्तृत आन्दोलन के साहित्य में जो विभिन्न रुझान और प्रवृत्तियाँ प्रकट हुईं और जो विशेषताएँ सामने आईं उन पर विचार करें।

4.1.06.1. आत्मपरकता

व्यक्ति के प्रति आग्रह और आत्म-प्रतिष्ठा पर बल स्वछन्दतावाद का वह केन्द्र है जिसके इर्द-गिर्द उसकी अन्य मान्यताओं, विश्वासों और काव्य-मूल्यों का ताना-बाना बुना गया है। स्वछन्दतावादी कवि की अपनी वेदना, मन:स्थिति, आशा-निराशा और कल्पना की अभिव्यक्ति जिस गहराई और संवेदना के साथ हुई है वैसी अभिव्यक्ति अन्य सामाजिक तथ्यों की नहीं हुई है। व्यक्ति की भावनाओं और उसकी विशेष रचनात्मक प्रतिभा को इतना महत्त्व पहले कभी नहीं दिया गया गया था। पूंजीवाद के विकास के साथ उभरे शहरीकरण और विशेषीकरण ने जीवन को विखण्डित कर दिया था। एक अपूर्ण और अकेला व्यक्ति उन परिस्थितियों का सामना कर रहा था। इस अपूर्णता और एकाकीपन से उसमें आत्म-सजकता और वैयक्तिक चेतना का अभूतपूर्व संचार

हुआ। अपने खोए हुए संसार को पुन: प्राप्त करने के लिए कभी अतीत और कभी भविष्य में उसके सपने देखने लगा।

व्यक्ति को अधिक महत्त्व देने के फलस्वरूप व्यक्तिगत दृष्टिकोण अर्थात आत्मपरकता को काव्य का उच्चत्तर मूल्य माना गया गया। अनेक बार तार्किक और वैज्ञानिक रूप से सिद्ध तथ्यों के सन्दर्भ में भी व्यक्तिगत आग्रहों के कारण यथार्थ-जगत् के क्रिया-व्यापारों की उपेक्षा कर दी जाती थी। इस नितान्त व्यक्तिगत अनुभव की अभिव्यक्ति अर्द्ध-धार्मिक प्रतीकों में भी होती है। यहाँ अतिशय भावुकता और रहस्यवादी स्थिति मोहक लगती है। अन्यमनस्कता और सामाजिक मुद्दों से अलगाव कवि के असंतोष को प्रकट करने का तरीक़ा बन जाता है।

4.1.06.2. प्रकृति-प्रेम

स्वछन्दतावादी कवियों ने अपने विश्व-बोध के लिए प्रकृति के सत्य और सौन्दर्य के गीत गाए हैं। मानव सभ्यता के विकास की विकृत्तियों से मुक्ति प्राप्त करने के लिए रूसो ने मनुष्य को प्रकृति की शरण में लौट जाने के लिए पुकारा था। वर्ड्सवर्थ ने लिखा कि "कविता मनुष्य और प्रकृति का प्रतिरूप है"। यह मनुष्य शहरी और आभिजात्य नहीं है, बल्कि साधारण और ग्रामीण मनुष्य है। यह प्रकृति ऊबड़-खाबड़ मैदानों, जंगलों, लहलहाते खेतों, टहलते-चहकते पशु-पक्षियों, नदियों-झरनों और उल्लासभरे देहातों की प्रकृति है।

स्वछन्दतावादी कवियों का प्रकृति-प्रेम उन्मुक्त और सहज है। हर तरह के बनावटी सौन्दर्य का तिरस्कार करते हुए उन्होंने प्रकृति के भव्य और आनन्ददायक रूपों का मनमोहक चित्रण किया है। उस समय जब औद्योगीकरण और पूंजीवाद की शक्तियाँ प्रकृति के लिए ख़तरा बन रही थी तथा औद्योगिक सभ्यता का अन्धविकास जन-मन की विकलता बढ़ा रहा था, तब स्वछन्दतावादी कवियों ने प्रकृति के आलिंगन में राहत की सांस ली। ये कवि प्रकृति के सौन्दर्य और उल्लास, उसकी चमक-दमक और रूखेपन में उपलब्ध जीवन-कणों से अपनी कविता और अभिव्यक्ति को समृद्ध करते हैं। यह प्रकृति-चित्रण भौतिक सौन्दर्य के लिए उतना नहीं था जितना प्रकृति के विविध रूपों और रंगों में मनुष्य की वास्तविक अस्मिता प्राप्त करने के लिए था। कहना न होगा कि मनुष्य और प्रकृति के पारस्परिक सम्बन्धों का उद्घाटन करने वाला यह प्रकृति-वरण स्वछन्दतावादी कवियों की मुख्य अनुभूति और प्रेरणा है।

4.1.06.3. भाव-प्रवणता

स्वछन्दतावादी कवियों ने तार्किकता पर आधारित चिन्तन और व्यवहार को अवांछनीय और त्याज्य करार दिया। उसके स्थान पर भावों, और कभी-कभी भावातिरेक को अधिक महत्त्व दिया है। 'लिरिकल बैलेड्स' की भूमिका में वर्ड्सवर्थ ने बार-बार यह बताने का प्रयास किया है कि "कविता प्रबल मनोवेगों का सहज उत्प्रवाह है"। मनोवेगों का यह उत्प्रवाह सहज है लेकिन अमर्यादित नहीं है, क्योंकि ये मनोवेग शान्त अवस्था की संस्मृतियाँ हैं। कवि की संवेदनशीलता और कल्पनाशक्ति उसके भावों और विचारों में सन्तुलन बनाती है जिससे 'आत्म' की अभिव्यक्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। स्वछन्दतावादी काव्य मुख्यत: भाव प्रधान चिन्तन का काव्य है,

जिसके सरोकार मानवीय अनुभव और समस्याएँ हैं। यही कारण है कि इस काव्य में भावुकता के साथ निराशा और उदासी के भाव (भावजन्य विषाद) भी आए हैं।

4.1.06.4. कल्पना

अनुकरणात्मक-तर्कवादी सौन्दर्यशास्त्र में अतिवादी आग्रहों के कारण कविता को एक ऐसी कलाकारी माना जाने लगा था, जिसे कुछ नियमों के आधार पर कोई भी सीख सकता है। वहाँ रचनात्मक कल्पना का कोई स्थान नहीं था। कॉलरिज कहता है कि कल्पना द्वारा ही काव्य हृदयग्राही, मर्मस्पर्शी और सजीव बनता है, इसलिए कल्पना की क्षमता और महत्त्व अक्षुण्ण है। वर्ड्सवर्थ के अनुसार कल्पना परम शक्ति है। वह मन का विस्तार और भाव-विभोर बुद्धि है जो हमें चेतना के आतंक से मुक्त करती हैतथा हमें यह बोध कराती है कि मन ही बाह्य चेतना का अधिपति है।

4.1.06.5. विद्रोह

यूरोप में सत्रहवीं और अट्ठारहवीं शताब्दियों में बुद्धि और तर्क की अधिकता और प्रभाव के कारण साहित्य में भावों का स्थान गौण हो गया था। धीरे-धीरे इस प्रवृत्ति के विरुद्ध वैयक्तिक भावोन्मेष मुखर होने लगा और स्वछन्दतावाद के रूप में एक नए काव्य आन्दोलन का जन्म हुआ। इसलिए स्वछन्दतावाद को 'तार्किकता के विरुद्ध भाव का विद्रोह' कहा जाता है। स्वतन्त्रता की कामना इस विद्रोह की मुख्य प्रेरणा थी जिसका स्रोत फ्रांसीसी क्रान्ति का जन-विद्रोह था। स्वछन्दतावादी कवियों ने प्राचीन काव्य परम्पराओं को नकारते हुए लोगों की संवेदन-शक्ति को स्वतन्त्र कर दिया। इनका भाव-संसार प्रकृति-प्रेम से लेकर स्वतन्त्रता के प्रेम तक विस्तृत और समृद्ध था। इन विद्रोही कवियों के हाथों गहराई से अनुभूत भावों को अभिव्यक्त करने के व्यक्ति के अधिकार की पुनर्स्थापना हुई।

अभिजनोन्मुखी संस्कारों के स्थान पर सामान्य जन की भावना और बौद्धिक क्षमताओं को आधार मानकर कविताएँ लिखी गईं। शहरी सभ्यता के स्थान पर ग्रामीण जीवन को चित्रित किया गया। कृत्रिमता और भद्रता की जगह सहजता और मौलिकता को महत्त्व दिया गया। विद्रोह के इस ज्वार में न केवल साहित्य की विषयवस्तु में परिवर्तन हुआ, बल्कि भाषा और शिल्प के स्तर पर भी अभिनव प्रयोग किए गए, जिनकी चर्चा आगे की जाएगी।

4.1.06.6. भाषा-शैली और काव्यरूप

सौन्दर्यशास्त्र का कलाओं की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। साहित्य के इतिहास में रूप और अन्तर्वस्तु की जैसी विविधता और नवीनता स्वछन्दतावाद में दिखाई देती है वैसी किसी अन्य काल में देखने को नहीं मिलती। परम्परागत काव्य-मूल्यों को पूरी तरह निरस्त करना सम्भव नहीं था, परन्तु नए प्रतीकों और मिथकों का विषयानुरूप प्रयोग करते हुए इन कवियों ने अनेक अभिनव प्रयोग किए। छन्दबद्ध तुकांत

कविता का स्थान छन्दमुक्त अतुकांत कविता और गीतिकाव्य ने ले लिया। अर्थगुम्फ़ित प्रतीकों को प्रकृति की सांकेतिक भाषा और मानवीय सौन्दर्यबोध का सहसम्बन्धी माना गया। वस्तुत: भाषा में अनकहे को कहने की महत्त्वाकांक्षा ही मिथकों और प्रतीकों को कविता के आँगन में ले आई। अपने अन्तर्मन को प्रकाशित करने के लिए कवि स्वयं कविता का नायक और वाचक बना। आमजन की अपरिष्कृत भाषा और साधारण बोलचाल की शब्दावली को कविता में लाकर भावसमृद्ध बनाया और देशज काव्य-रूपों, जैसे लोकगीतों और लोक वार्ताओं, को काव्यात्मक गरिमा के साथ अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया।

स्वछन्दतावाद में आत्मपरकता, भावावेग और कल्पना पर बल दिये जाने के कारण कला के नए-नए रूपों का आविष्कार हुआ। कला के इन सभी रूपों का निर्धारण उनमें अन्तर्भूत सौन्दर्यात्मक पहलुओं के आधार पर होने लगा। स्वछन्दतावादी कवियों ने अपने-अपने ढंग से नए काव्य-मूल्यों का अन्वेषण किया जिससे साहित्यिक विधाओं और उनके श्रेष्ठता-क्रम में भारी परिवर्तन हुआ। गीत अब एक सर्व-स्वीकृत काव्य-रूप था, क्योंकि यह आत्माभिव्यक्ति के स्वछन्दतावादी दृष्टिकोण के अनुरूप था। स्वछन्दतावादी साहित्य में गीत को अभूतपूर्व महत्त्व प्राप्त हुआ।

4.1.06.7. सौन्दर्य की चाह

स्वछन्दतावादियों ने आभिजात्यवादी सौम्यता और भद्रता के स्थान पर निश्छल सौन्दर्य को अधिक महत्त्व दिया है। बाल्यावस्था और प्रकृति के मध्य सम्बन्ध और सादृश्य की अभिव्यक्ति में सौन्दर्य का यह अनुपम रूप देखने को मिलता है। कीट्स ने सौन्दर्य को ही सत्य माना है और कहा है कि सत्य और सुन्दर अभिन्न हैं। वॉल्टर पेटर लिखता है कि सौन्दर्य की चाह प्रत्येक कलात्मक रचना का स्थायी भाव है, इसलिए यह सौन्दर्य की चाह में जिज्ञासा का मेल है जो स्वछन्द प्रकृति का निर्माण करता है।

4.1.07. स्वछन्दतावाद की अन्य प्रवृत्तियाँ

स्वछन्दतावादी आन्दोलन में अनेक ऐसी विशेषताएँ थीं कि उनकी कोई अन्तिम सूची नहीं बनाई जा सकती। आइये कुछ ऐसी प्रवृत्तियों की चर्चा करें जिन पर प्राय: कम ध्यान दिया जाता है।

4.1.07.1. जैविकता

स्वछन्दतावादी लेखक कलाकृति को प्रेरणा का परिणाम मानते हैं। उन्होंने कलाकृति के रूपाकार को जीव-जगत् और वनस्पति-जगत् की उपमाओं और रूपकों के माध्यम से स्पष्ट किया है। कॉलरिज कविता को विकसित होते हुए पौधे की तरह देखता है। कीट्स कहता है कि "यदि कविता पेड़ की पत्तियों की तरह स्वाभाविक रूप से न आए, तो अच्छा है कि वह न ही आए"। शेली कविता की रचना-प्रक्रिया को माँ के गर्भ में पल रहे शिशु के विकास की तरह मानता है।

4.1.07.2. विलक्षणता और चित्रात्मकता

प्रेत कथाओं तथा अप्राकृतिक और डरावने दृश्यों के प्रति मोह स्वछन्दतावादी रचनाओं में प्राय: प्रकट हुआ है। सामान्य कुतूहल और विस्मय के भावों के साथ-साथ अतिमानवीय घटनाओं और अनुभवों का चित्रण इस दौर में कई तरह से हुआ है। इस विलक्षणता और चित्रात्मकता के सूत्र मध्यकाल में हैं। मध्यकाल का धार्मिक, सामाजिक और सैनिक जीवन तथा सभी कलाएँ अद्भुत ही थीं। आभिजात्यवाद ने मध्ययुग की उपेक्षा की थी, स्वछन्दतावादियों ने इस युग के परिचित जीवन-सन्दर्भों और वस्तुओं को पुनरुज्जीवित कर अपने भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम बना दिया।

4.1.07.3. विडम्बना

'विडम्बना' का प्रयोग स्वछन्दतावादी साहित्य में उसके परम्परागत अर्थ से अलग अर्थों में हुआ है। जर्मन विचारक फ्रेड्रिक शिलर विडम्बना को तार्किक सौन्दर्य का एक रूप मानते हुए उसे असीम और सार्वभौम की अभिव्यक्ति के रूप में परिभाषित करता है। स्वछन्दतावादियों ने अर्थगर्भित विडम्बना के माध्यम से बुर्जुआ विचारों में निहित यांत्रिकता, उपयोगितावाद और संकीर्ण व्यापारिक दृष्टि का विरोध किया है।

4.1.07.4. राष्ट्रवाद

स्वछन्दतावाद की एक महत्त्वपूर्ण देन 'राष्ट्रवाद' के विचार का विकास है। आन्दोलन के आरम्भिक दिनों में राष्ट्रीय भाषाओं और लोक वार्ताओं पर ध्यान केन्द्रित करते हुए रूसो और हर्डर ने स्वछन्दतावादियों के लिए राष्ट्रवाद की विषय-वस्तु का आधार तैयार कर दिया था। फ्रांस की राज्य-क्रान्ति के बाद राष्ट्रवाद के स्वरूप में बहुत परिवर्तन आया जिसे स्वछन्दतावादियों ने अपनी रचनाओं में पर्याप्त स्थान दिया। जर्मनी में फ़िख़्टे ने भाषा और राष्ट्र की एकता पर बल दिया था।

4.1.08. स्वछन्दतावाद का अवसान

स्वछन्दतावाद के परिणामों और इस प्रवृत्ति के ह्रास के बारे में कोई निश्चित कारण नहीं बताया जा सकता। परस्पर विरोधी औए अनुपूरक मतों को दो श्रेणियों में रखा जा सकता है। एक ओर गेटे के परवर्ती मत का समर्थन करने वाले लोग हैं कि "स्वछन्दतावाद आत्मा की रुग्णता और सापेक्षतावाद का अव्यवस्थित विस्फ़ोट था"। तो दूसरी ओर वे लोग हैं जो इसे एक प्रकार का पुनर्जागरण, पुनरान्वेषण और क्रान्तिकारी उभार मानते हैं जिसने पुरातन प्रतिमानों और विश्वासों को नकार कर मन और आत्मा की नई रचनात्मक स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया। इसमें कोई संदेह नहीं कि इस आन्दोलन ने अनेक मूल्यवान कृतियाँ साहित्य और कला जगत् को दी हैं। परन्तु अनेक रचनाएँ ऐसी भी हैं जिनमें आत्मपरक भावातिरेक और यथार्थ जीवन से विमुखता इतनी अधिक है कि वे कवि के आत्मकेन्द्रित प्रलाप से अधिक कुछ भी नहीं हैं। परिणामस्वरूप स्वछन्दतावाद अपनी प्रासंगिकता

खोता चला गया और अन्तत: उन्नीसवीं सदी के चौथे दशक में उभरे नए रुझानों ने इसे साहित्य के मुख्य मार्ग से अपदस्त कर दिया।

4.1.09. पाठ का सारांश

स्वछन्दतावाद आभिजात्यवाद और नव्य-आभिजात्यवाद से भिन्न और अधिकांश में उसका विरोधी कला-आन्दोलन था । अलग-अलग देशों में समय के कुछ अन्तराल पर उभरे इस आन्दोलन में स्थानीय परिस्थितियों और संस्कारों के सहयोग से एक सर्वथा नवीन सांस्कृतिक समझ का उद्भव हुआ। फ्रांसीसीक्रान्ति, औद्योगिक क्रान्ति और पूंजीवाद के विकास ने यूरोपीय समाज के मूल्यों और मान्यताओं को निर्णायक रूप से प्रभावित किया। धार्मिक रूढ़ियों और प्रचलित सांस्कृतिक चिन्तन के प्रति विद्रोह हुआ। जर्मनी, इंग्लैण्ड और फ्रांस के बाद अन्य यूरोपीय देशों में भी इसका प्रसार हुआ। इसमें कला के नए प्रतिमानों का निर्माण, नए मिथकों और प्रतीकों का प्रयोग, काव्यशैली की नूतनता और बिम्ब-विधान, प्रकृति के साथ मनुष्य के सम्बन्धों का पुनरुद्घाटन, कल्पना की केन्द्रीयता आदि ऐसे तत्त्व हैं जो इस आन्दोलन के साहित्य को पूर्वकालीन साहित्य से अलग और विशिष्ट बनाते हैं।

4.1.10. उपयोगी पुस्तकें और सन्दर्भ

4.1.10.1. हिन्दी की पुस्तकें

1. जैन, निर्मला (2013). पाश्चात्य साहित्य चिन्तन. नई दिल्ली. राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड. ISBN : 978-81-8361-607-2
2. तिवारी, डॉ॰ रामचन्द्र.(2016). भारतीय व पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिन्दी-आलोचना, वाराणसी. विश्वविद्यालय प्रकाशन. ISBN : 978-81-7124-764-6.
3. शर्मा, देवेन्द्रनाथ. (1984). पाश्चात्य काव्यशास्त्र. नई दिल्ली. नेशनल पब्लिशिंग हाउस.

4.1.10.2. अंग्रेज़ी पुस्तकें

1. Abrams, M.H. and Harpham, Geoffrey Galt, (2015). Delhi. A Glossary of Literary Terms,11e. Cengage Learning. ISBN-13:978-81-315-2635-4
2. Brown, Marshall (ed.). (2007).The Cambridge History of Literary Criticism, Vol 5. New York. Cambridge University Press.ISBN-13 978-0-521-31721-4
3. Day, Aidan. (1996).Romanticism. New York. Rutledge. ISBN- 0–415–08378–8
4. Habib, M. A. R. (2005) . A History of Literary Criticism: From Plato to the Present. Malden, USA. Blackwell Publishing. ISBN-13: 978-0-631-23200-1

5. Wellek, Rene.((2005).Concepts of Literature. London. Yale University Press. ISBN-13 978-0300094633
6. Widdowson, Peter. (2004).The Palgrave Guide to English Literature and its Contexts,1500–2000. New York. Palgrave Macmillan. ISBN 0–333–79218–1

4.1.10.3. इंटरनेट स्रोत

1. www.britannica.com/art/Romanticism
2. https://plato.stanford.rdu/archieves/fall2016/entries/aesthetics-19th-romantic/.

4.1.11. अभ्यास के लिए प्रश्न

01. स्वछन्दतावाद का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
02. "कविता व्यक्ति के अन्तर्मन की अभिव्यक्ति है"। समझाइए।
03. " 'लिरिकल बैलेड्स' 'अंग्रेज़ी स्वछन्दतावाद का घोषणा-पत्र है"। क्यों ?
04. 'रोमैण्टिक कविता' शब्द का प्रथम प्रयोग किसने किया था ?
05. 'स्वछन्द विडम्बना' की अवधारणा किसने प्रस्तुत की थी ?
06. वर्ड्सवर्थ के अनुसार "कविता प्रबल मनोवेगों का सहज उत्प्रवाह है"। कैसे ?
07. स्वछन्दतावाद 'तार्किकता के विरुद्ध भाव का विद्रोह है'। समझाइये।
08. स्वछन्दतावादों के बहुवाद का आशय स्पष्ट कीजिए।
09. स्वछन्दतावादी कवियों के प्रकृति-चित्रण की विशेषताएँ बताइए।
10. फ्रांस की राज्य-क्रान्ति और स्वछन्दतावाद का क्या सम्बन्ध है ?
11. स्वछन्दतावाद के इतिहास पर प्रकाश डालिए।
12. स्वछन्दतावाद के दार्शनिक आधारों की व्याख्या कीजिए।
13. स्वछन्दतावाद के मुख्य प्रेरक तत्त्वों का परीक्षण कीजिए।
14. स्वछन्दतावाद के विकास में औद्योगिक क्रान्ति और पूंजीवाद की क्या भूमिका थी ? स्पष्ट कीजिए।
15. स्वछन्दतावाद की प्रवृत्तियों पर आलोचनात्मक टिप्पणी कीजिए।

❖❖❖